CAREERINDIA

27

Total Pages : 3

ENTRANCE EXAMINATION, 2018

M.A. HINDI

[Field of Study Code : HNDM (210)]

Time Allowed : 3 hours *Maximum Marks* : 100

इस प्रश्न-पत्र में **दो** खण्ड हैं। खण्ड–I से **चार** प्रश्न करने हैं, प्रत्येक के *10* अंक हैं।
खण्ड–II से **तीन** प्रश्न करने हैं, प्रत्येक के *20* अंक हैं।

खण्ड—I

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग *100* शब्दों में दीजिए।

1. आदिकाल के नामकरण को स्पष्ट कीजिए।

2. संत साहित्य की सामाजिक चेतना को उद्घाटित कीजिए।

3. सूफी काव्य में जायसी के योगदान पर विचार कीजिए।

4. सूरदास की प्रेम दृष्टि को अभिव्यक्त कीजिए।

5. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कविता को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

6. हिन्दी साहित्येतिहास के आधुनिक काल को आधुनिक मानने के कारणों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** साहित्यकार के अवदान को प्रस्तुत कीजिए :

(क) महादेवी वर्मा

(ख) प्रेमचंद

(ग) मोहन राकेश

(घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ङ) कृष्णा सोबती

(च) विद्यापति

CAREERINDIA

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** रचना की आलोचना कीजिए :

(क) पृथ्वीराज रासो

(ख) रामचरितमानस

(ग) बिहारी सतसई

(घ) मैला आँचल

(ङ) 'हंस' पत्रिका

(च) वापसी (उषा प्रियंवदा की कहानी)

खण्ड—II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए।

9. कबीर भारतीय लोक चेतना की विविधता के वाहक हैं। इस कथन के आधार पर उनके काव्य की आलोचना कीजिए।

10. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी की प्रवृत्तियों पर आलोचनात्मक निबंध लिखिए।

11. नवजागरण की दृष्टि से छायावादी कविता का मूल्यांकन कीजिए।

12. दलित विमर्श अथवा स्त्री विमर्श की वैचारिकी को परिभाषित करते हुए दलित अथवा स्त्री विमर्श की साहित्यिक प्रवृत्तियों की आलोचना कीजिए।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) खड़ी बोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका

(ख) भारतेंदु हरिश्चन्द्र के नाटक

(ग) हिन्दी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान

(घ) द्विवेदी युग की पत्रकारिता

(ङ) तार सप्तक

(च) नागार्जुन की कविता

(छ) मन्नू भण्डारी के उपन्यास

14. निम्नलिखित में से किसी **एक** काव्यांश के भाव व शिल्पगत सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए :

(क) "अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुंई,
टटकी कली चंपे की, बगैरह, तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।"

CAREERINDIA

(ख) ''कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन।
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार—
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार।''

★★★